मां दक्षिण काली एवं बाबा कामराज जी की कृपा से प्रकाशित

श्री दक्षिण काली संदेश

अध्यात्म, तन्त्र और ज्योतिष की हिन्दी मासिक पत्रिका

आशीर्वाद एवं प्रेरणास्रोत

अनन्तश्रीविभूषित साक्षात् शिवस्वरूप

श्री महन्त बापू गोपालानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज

सभापति, श्री पंचाग्नि अखाड़ा, श्री रावतेश्वर मंदिर, बिल्खा, जूनागढ़, गुजरात

संरक्षक

महामण्डलेश्वर

स्वामी कैलाशानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज

पीठाधीश्वर, सिद्धपीठ श्री दक्षिण काली मंदिर, चंडीघाट, हरिद्वार

सम्पादक

चंद्र शेखर शास्त्री

दूरभाषः 09319313111

email: csshaastri@gmail.com

वर्षः 1 अंकः 1

चैत्र शुक्ल सप्तमी, संवत् २०७१ (अप्रैल 2014)

हरिद्वार उत्तराखण्ड

श्री दक्षिण काली संदेश ट्रस्ट

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक चंद्रशेखर शास्त्री ने भारती प्रिंटर्स, लोअर बाजार, मोदीनगर से मुद्रित कराकर सिद्धपीठ श्री दक्षिण काली मंदिर परिसर, चंड़ीघाट, हरिद्वार से प्रकाशित किया। संपादकः चंद्रशेखर शास्त्री

सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता शुल्क	**₹- 1001**
साधारण सदस्य (5 वर्ष हेतु)	**₹- 5101**
विशिष्ट सदस्य (10 वर्ष हेतु)	**₹- 11101**
सम्मानित सदस्य (20 वर्ष हेतु)	**₹- 25101**
आजीवन सदस्य	**₹- 51001**
आजीवन संरक्षक सदस्य	**₹-100001**

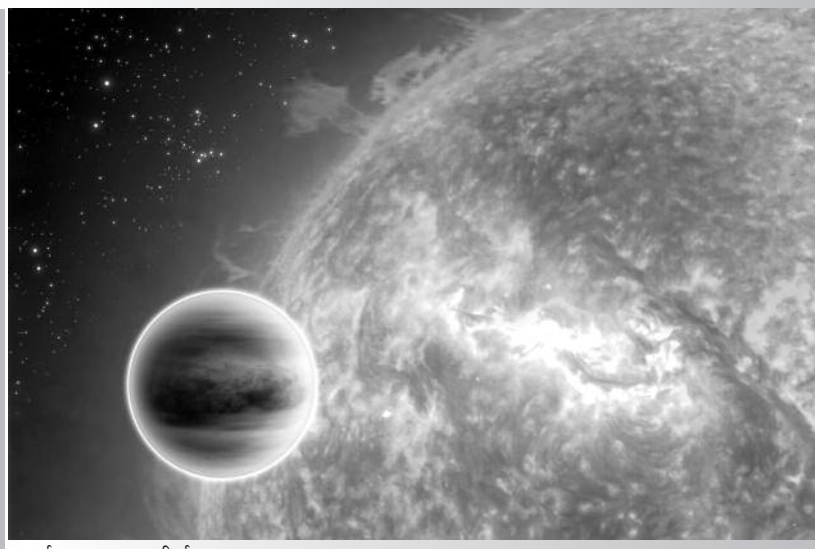

माई बाबा का आशीर्वाद	02, 03
सद्गुरुदेव बापू जी का संदेश	04
सद्गुरुदेव स्वामी कैलाशानंद जी का संदेश	05
संपादकीय	06
नवरात्र में करें व्रत अनुष्ठान	08
नवरात्र पर करें विशेष उपाय	10
नवरात्र पर कैसे करें दुर्गा पूजन	12
गावो विश्वस्य मातरः	16
दुर्भाग्य दूर करते है देवगुरु बृहस्पति	18
असीम शांति की अनुभूति हाती है गंगोत्री में	19
शांति की अधिष्ठात्री हैं मां अन्नपूर्णा	20
गाय के घी में है अद्भुत स्वर्णक्षार	22
अग्निर्वै मुखं देवानाम्	24
इस माह के विशेष योग	25
वेदों के उद्धारक थे महर्षि वेद व्यास	26
आपके सितारे	28
मासिक पंचांग	29

आवरण चित्र : महामण्डलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी कैलाशानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज

चेतावनी

श्री वृद्धि और सुख-शांति के लिए अलौकिक मंत्र, यंत्र, तंत्र साधनाओं का विशिष्ट महत्व है। परंतु यदि किसी साधक को प्रस्तुत पत्रिका में दी गई साधना के प्रयोग में विधिगत, वस्तुगत अशुद्धता अथवा स्व त्रुटि के कारण किसी भी प्रकार की कोई भी क्लेशजनक हानि होती है। अथवा किसी भी प्रकार का कोई अनिष्ट होता है, तो उसका उत्तरदायित्व स्वयं साधक का होगा। लेखक, संपादक, प्रकाशक मुद्रक अथवा वितरक उसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होंगे। अतः कोई भी प्रयोग योग्य गुरु के संरक्षण में ही सम्पन्न करें। **-प्रकाशक**

श्री दक्षिण काली संदेश में विज्ञापन दर

श्वेत श्याम चौथाई पृष्ठः ₹2000 श्वेत श्याम आधा पृष्ठः ₹4000

श्वेत श्याम पूरा पृष्ठ : ₹7000 रंगीन दर पूरा पृष्ठ : ₹11000

इनसाइड कवर रंगीन : ₹15000 बैक कवर पृष्ठ : ₹21000

श्री दक्षिण काली संदेश में विज्ञापन एवं सदस्यता के लिए संपर्क करें।-

पं. चंद्र शेखर शास्त्री

7 कृष्णानगर, दिल्ली मेरठ रोड़, लोअर बाजार, मोदीनगर-201204

दूरभाष : 09319313111, 09312535000

आज जितने भी कथाएं होती है, यज्ञ, अनुष्ठान होते हैं, जप-तप होते हैं, उनमें नाम-जप का कुछ प्रभाव पड़ता हो पर अंत मे जो यज्ञ होता है वह सफल कितने होते हैं, यह भगवान् को ही मालूम है क्योंकि इन यज्ञों में शुद्ध गौ घृत का उपयोग नहीं के बराबर होता है। आज भारत वर्ष मे पूर्व की अपेक्षा यज्ञ, धर्म, कर्म अधिक हो रहे हैं, पर फल नहीं मिलता, यज्ञ सफल नहीं होते, क्या कारण है? इसके मूल में यही है कि जिस धरती पर गौ, ब्राह्मण, साधू-संत, स्त्री दुखी होते है वहां पर पुण्य कर्म फल नहीं देते।

गावो विश्वस्य मातरः

आज भारत वर्ष मे ही नहीं पूरे विश्व में सभी मानव सुखी है पर जीव मात्र की माता कहलाने का अधिकार रखने वाली वेदों द्वारा पूज्यनीय, देवताओं को भी भोग और मोक्ष प्रदान करने की शक्ति रखने वाली गौ माता आज सड़कों पर मल, गन्दगी, प्लास्टिक खाने को मजबूर है।

भगवान श्री कृष्ण की कृपा से आज भी भारत वर्ष मे ही नहीं पूरे विश्व मे कुछ ऐसे पुण्यवान, भामाशाह और अपनी माँ के कोख को धन्य करने वाले गौ भक्त भी है, जिनके सहयोग से आज भी लाखों गौवंश गौशालाओं मे, किसानों के यहाँ, अपने घर पर ही सुरक्षित है। क्या ये गौभक्त, जिनकी वजह से पूरी सृष्टि का संतुलन बना हुआ है, आगे भी इसी प्रकार गौसेवा में संलग्न रह सकेंगे?

शेष मानव जाति को जिनको परमात्मा ने सोचने के लिए बुद्धि दे रखी है, का भी कर्तव्य बनता है कि इस गौ संवर्धन को उठाने में ग्वालबालों एवं गिलहरी की तरह थोड़ा थोड़ा यथा योग्य योगदान दें। जब हम थोडा-थोडा योगदान देंगे तो हम सभी गौभक्तों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं रहेगा।

शास्त्र कहता है कि गौ भक्त जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है वह सब उसे प्राप्त होती है। स्त्रियों में भी जो गौओं की भक्त है, वे मनोवांछित कामनाएं प्राप्त कर लेती हैं। पुत्रार्थी पुत्र पाता है, कन्यार्थी कन्या, धनार्थी

धन, धर्मार्थी धर्म, विद्यार्थी विद्या और सुखार्थी सुख पा जाता है। विश्व भर में कहीं भी गौभक्त को कुछ भी दुर्लभ नहीं है। यहाँ तक की मोक्ष भी बिना गाय के पूंछ पकडे संभव नहीं। वैतरणी पर यमराज एवं उसके गण भयभीत होकर गाय के पूंछ पकडे जीव को प्रणाम करते हैं।

देवताओं और दानवो के द्वारा समुद्र मंथन के वक्त 5 गायें उत्पन्न हुई, इनका नाम था- नंदा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला और बहुला। ये सभी गायें भगवान की आज्ञा से देवताओं और दानवों ने महर्षि जमदग्नि, भारद्वाज, वशिष्ट, असित और गौतम मुनि को समर्पित कर दीं। आज जितने भी देशी गौवंश भारत एवं इतर देशो में है, वह सब इन्ही 5 गौओं की संतान है और हमारे पूर्वजों एवं ऋषियों का यह महाधन है। क्या हम सिर्फ गोत्र बताने के लिए ही अपने ऋषियों की संताने हैं? उनकी सम्पति गौ धन को बचाना हमारा कर्तव्य नहीं?

चित्रकारः कुमार ज्ञानेंद्र

आज भारत वर्ष में ही करोड़ों लोग सुबह शाम देवालयों मे माथा टेक कर भगवान से मनोकामनाएँ मांगते हैं, पर इन में से लाखों लोगो को यह तक भी मालूम नहीं है की जिस देवता से वे याचना कर रहे है उन्हें कुछ भी दे देने की शक्ति तभी आएगी जब हवन द्वारा अग्नि के मुख से देवताओं तक शुद्ध गौ घृत पहुंचेगा। जब हम हवन में गाय के घी से मिश्रित चरू देवताओं को अर्पण करते हैं। उस उत्तम हविष्य से देवता बलिष्ट एवं पुष्ट होते हैं। जब देवता शक्तिशाली होगा तभी अपनी शक्ति के बल पर आपकी-हमारी मनोकामनाएं पूरी करने मे समर्थ होंगे। पर जब गौवंश ही नहीं रहेगा तो शुद्ध गौ घृत कहा से आएगा और शुद्ध गौ घृत नहीं होगा तो हवन कहा से होगा और हवन नहीं होंगे तो देवता पुष्ट कैसे होंगे और देवता पुष्ट नहीं होंगे तो शक्तिहीन देवता मनोकामनाएं पूर्ण कैसे करेंगे। आज हम लोग पेड़ लगा देते है पानी खाद नहीं डालेंगे तो फल कहां से लगेंगे। यह प्रकृति के नियम के विरुद्ध है। आज जितने भी कथाएं होती है, यज्ञ, अनुष्टान होते हैं, जप-तप होते हैं, उनमें नाम-जप का कुछ प्रभाव पड़ता हो पर अंत मे जो यज्ञ होता है वह सफल कितने होते हैं, यह भगवान् को ही मालूम है क्योंकि इन यज्ञों में शुद्ध गौ घृत का उपयोग नहीं के बराबर होता है। आज भारत वर्ष मे पूर्व की अपेक्षा यज्ञ, धर्म, कर्म अधिक हो रहे हैं, पर फल नहीं मिलता, यज्ञ सफल नहीं होते, क्या कारण है? इसके मूल में यही है कि जिस धरती पर गौ, ब्राहमण, साधू-संत, स्त्री दुखी होते है वहां पर पुण्य कर्म फल नहीं देते।

आज भारत वर्ष में ही करोड़ों लोग सुबह शाम देवालयों मे माथा टेक कर भगवान से मनोकामनाएँ मांगते हैं, पर इन में से लाखों लोगो को यह तक भी मालूम नहीं है की जिस देवता से वे याचना कर रहे है उन्हें कुछ भी दे देने की शक्ति तभी आएगी जब हवन द्वारा अग्नि के मुख से देवताओं तक शुद्ध गौ घृत पहुंचेगा। जब हम हवन में गाय के घी से मिश्रित चरू देवताओं को अर्पण करते हैं। उस उत्तम हविष्य से देवता बलिष्ट एवं पुष्ट होते हैं। जब देवता शक्तिशाली होगा तभी अपनी शक्ति के बल पर आपकी-हमारी मनोकामनाएं पूरी करने मे समर्थ होंगे। पर जब गौवंश ही नहीं रहेगा तो शुद्ध गौ घृत कहा से आएगा और शुद्ध गौ घृत नहीं होगा तो हवन कहा से होगा और हवन नहीं होंगे तो देवता पुष्ट कैसे होंगे और देवता पुष्ट नहीं होंगे तो शक्तिहीन देवता मनोकामनाएं पूर्ण कैसे करेंगे।

गाय के घी में है अद्भुत स्वर्ण-क्षार

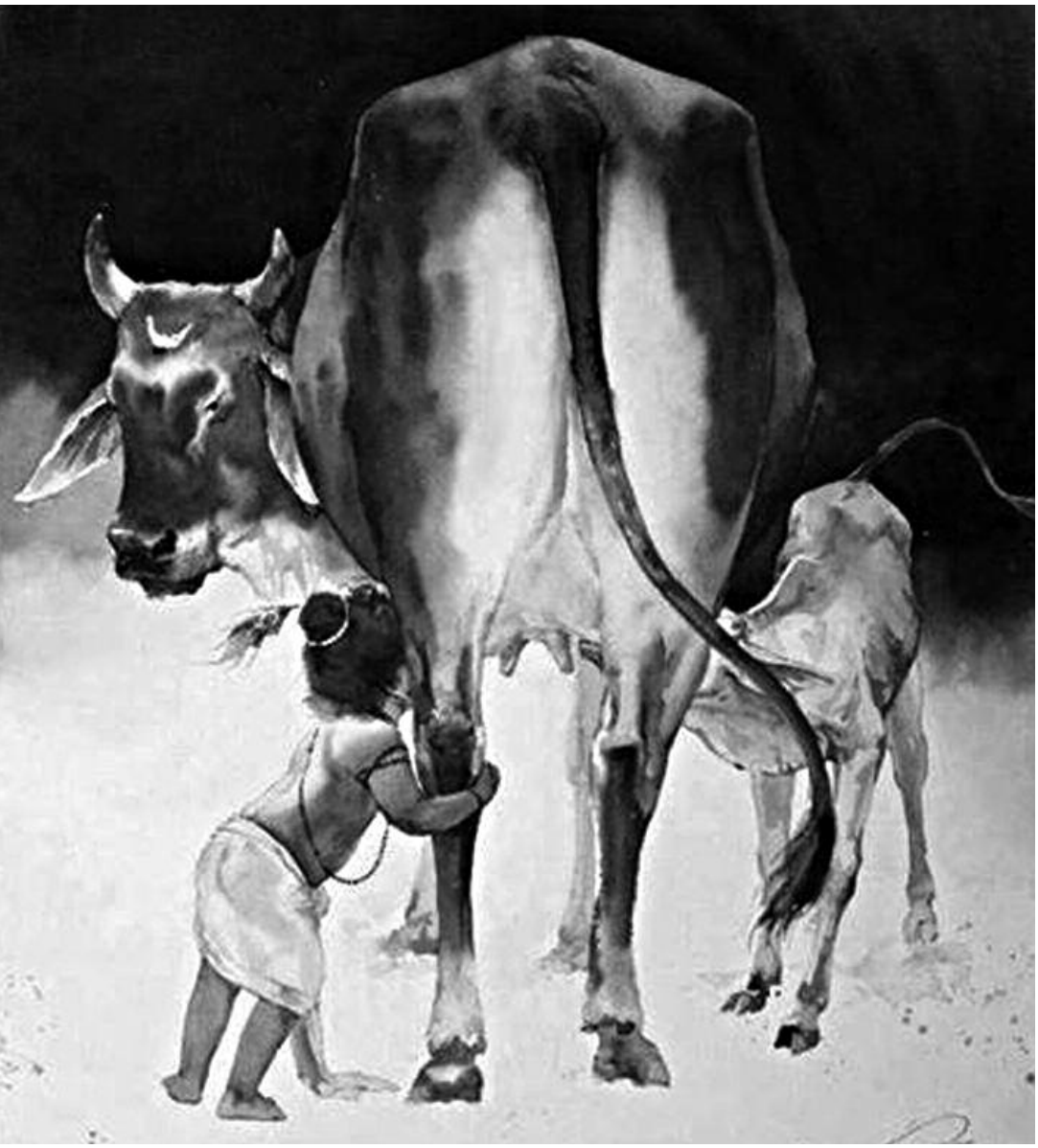

गाय के घी को अमृत कहा गया है जो युवावस्था को स्थिर रखते हुए वृद्धावस्था को दूर रखता है । श्यामा गाय के घृतपान से वृद्ध व्यक्ति भी युवा जैसा हो जाता है। देशी गाय के घी को रसायन कहा गया है, जो तरुणाई को कायम रखते हुए वृद्धावस्था को दूर रखता है। गाय के घी में पाए जाने वाले स्वर्ण-क्षार में अद्‌भुत औषधीय गुण होते हैं, जो गाय के घी के अलावा अन्य किसी घी में नहीं मिलते। गाय के घी में वैक्सीन एसिड, ब्यूट्रिक एसिड, बीटा-कैरोटीन जैसे माइक्रो न्यूट्रींस मौजूद होते हैं, जिनमें कैंसर युक्त तत्वों से लड़ने की अद्भुत क्षमता होती है।

धार्मिक दृष्टिकोण से देखने पर भी यदि गाय के 100 ग्राम घी से हवन अनुष्ठान (यज्ञ) किया जावे तो इसके परिणाम स्वरूप वातावरण में लगभग 1 टन ताजे ऑक्सीजन का उत्पादन होता है। यही कारण है कि मंदिरों में गाय के घी का दीपक जलाने तथा धार्मिक समारोहों में यज्ञ करने कि प्रथा प्रचलित है । इसमें वातावरण में फैले परमाणु विकिरणों को हटाने की पर्याप्त क्षमता होती है।

गाय के घी के औषधीय प्रयोग

-दो बूंद देसी गाय का घी नाक में सुबह शाम डालने से माइग्रेन दर्द ठीक होता है। गाय के घी को इसी प्रकार नाक में डालने से एलर्जी खत्म होती है, लकवे के रोग का उपचार होता है, कान का पर्दा ठीक हो जाता है, नाक की खुश्की दूर होती है और दिमाग तरोताजा हो जाता है, कोमा के रोगी की चेतना वापस लौटने लगती है, बाल झडना समाप्त होकर नए बाल आने लगते है, मानसिक शांति मिलती है और याददाश्त तेज होती है।

-हाथ पांव मे जलन होने पर गाय के घी की पैरों के तलवो में मालिश करने से जलन दूर होती है। ऐसे ही सिर दर्द के साथ यदि शरीर में गर्मी लगती हो तो गाय के घी की पैरों के तलवे पर मालिश करने से सर दर्द ठीक होकर शरीर में शीतलता महसूस होती है ।

-फफोलो पर गाय का देसी घी लगाने से आराम मिलता है।

-गाय के घी की छाती पर मालिश करने से बच्चों के बलगम को बहार निकालने में मदद मिलती है।

-सांप के काटने पर 100 -150 ग्राम घी पिलाकर उपर से जितना गुनगुना पानी पिला सके पिलायें जिससे उलटी और दस्त तो लगेंगे लेकिन सांप का विष कम हो जायेगा।

-अधिक कमजोरी की शिकायत लगने पर एकगिलास गाय के दूध में एक चम्मच गाय का घी और मिश्री डालकर पीने से शारीरिक कमजोरी दूर होती है ।

-हार्ट अटैक की तकलीफ वालों को चिकनाई खाने की मनाही हो तो भी गाय का घी खाएं, इससे हृदय शक्तिशाली होता है। यहाँ यह भी स्मरण रखें कि गाय के घी के सेवन से कॉलेस्ट्रॉल नहीं बढ़ता, वजन संतुलित

यदि गाय के 100 ग्राम घी से हवन अनुष्ठान (यज्ञ) किया जावे तो इसके परिणाम स्वरूप वातावरण में लगभग 1 टन ताजे ऑक्सीजन का उत्पादन होता है। यही कारण है कि मंदिरों में गाय के घी का दीपक जलाने तथा धार्मिक समारोहों में यज्ञ करने कि प्रथा प्रचलित इसमें वातावरण में फैले परमाणु विकिरणों को हटाने की पर्याप्त क्षमता होती है।

होता है। अर्थात् कमजोर व्यक्ति का वजन बढ़ता है और मोटे व्यक्ति का मोटापा (वजन) कम होता है।

-20-25 ग्राम घी मिश्री के साथ खिलाने से शराब, भांग व गांजे का नशा कम हो जाता है।

-गाय के घी का नियमित सेवन करने से एसिडिटी व कब्ज की शिकायत कम हो जाती है ।

-हिचकी के न रुकने पर गाय का आधा चम्मच घी खाए, हिचकी रुक जाएगी ।

-गाय के घी के नियमित सेवन से बल-वीर्य बढ़ता है और शारीरिक व मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है ।

-देसी गाय के घी में कैंसर से लड़ने की अचूक क्षमता होती है। यह इस बीमारी के फैलने को आश्चर्यजनक गति से रोकता है और इसके सेवन से स्तन तथा आंत के खतरनाक कैंसर से बचा जा सकता है ।

-रात को सोते समय एक गिलास मीठे दूध में एक चम्मच घी डालकर पीने से शरीर की खुश्की और दुर्बलता दूर होती है, नींद गहरी आती है, हड्डी बलवान होती है और सुबह शौच साफ आता है। शीतकाल के दिनों में यह प्रयोग करने से शरीर में बलवीर्य बढ़ता है और दुबलापन दूर होता है।

-एक चम्मच गाय के शुद्ध घी में एक चम्मच बूरा और 1/4 चम्मच पिसी काली मिर्च मिलाकर सुबह खाली पेट और रात को सोते समय चाट कर ऊपर से गर्म मीठा दूध पीने से आँखों की ज्योति बढ़ती है ।

उच्च कोलेस्ट्रॉल के रोगियों को गाय का घी ही खाना चाहिए । यह एक बहुत अच्छा टॉनिक भी है। गाय के घी की कुछ बूँदें दिन में तीन बार नाक में प्रयोग करने पर यह त्रिदोष (वात पित्त और कफ) को संतुलित करता है।

-गाय के घी को ठन्डे जल में फेंटकर घी को पानी से अलग कर लें, यह प्रक्रिया लगभग सौ बार करें और फिर इस घी में थोड़ा सा कपूर मिला दें । इस विधि द्वारा प्राप्त घी एक असरकारक औषधि में परिवर्तित हो जाता है जिसे त्वचा सम्बन्धी हर चर्म रोगों में चमत्कारिक मलहम कि तरह से इस्तेमाल कर सकते हैं। यह सौराइशिस के लिए भी कारगर है।

-गाय के घी में छिलके सहित पिसा हुआ काला चना और पिसी शक्कर (बूरा)तीनों को समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बाँध लें। प्रात: खाली पेटएक लड्डू खूब चबा-चबाकर खाते हुए एक गिलास मीठा कुनकुना दूध घूँट-घूँट करके पीने से स्त्रियों को प्रदर रोग में आराम होता है। पुरुषों को इसका प्रयोग सुडौल और बलवान बनता है। विशेष-यदि स्वस्थ व्यक्ति भी हर रोज नियमित रूप से सोने से पहले दोनों नाशिकाओं में हल्का गर्म (गुनगुना) देसी गाय का घी डालकर सोने की आदत बनालें तो इससे नींद गहरी आएगी, खराटे बंद होंगे, स्मरणशक्ति तेज होगी और अन्य अनेकों बीमारियों से शरीर का बचाव होता रह सकेगा। इसके लिए बिस्तर पर लेट कर दो दो बूंद घी दोनों नाकों में डाल कर पांच मिनट तक सीधे लेटे रहिये घी को जोर लगा कर न खीचें यह क्रिया अधिक प्रभावशाली होती है। सामान्य व्यक्ति रात को सोते वक्त तथा रोगी दिन में तीन बार देसी गाय का घी नाक में डाल सकते है । घी के बारे मे लोगो मे कई भ्रांतिया है हममे से ज्यादातर लोगो ने देशी घी के नुकसानों की कहानी ही पढ़ी है लोगों को लगता है घी खाने से कोलेस्ट्राल बढ़ जाता है,लोग मोटे हो जाते है आदि आदि, परिवार का कोई बुजर्ग सदस्य जब घी की अनदेखी पर चेताता है और कहता है कि घी खाने से हड्डियां मजबूत होती है, शरीर मे ताकत आती है तो उसकी सलाह को लोग पुराने जमाने की बात समझकर टाल देते है, शायद इसलिए कि ये सलाह फिटनेस के आधुनिक उपायों पर खरा नही उतरती इसलिए भी कि घी के फायदों के सम्बन्ध मे लोगों को कभी कोई प्रमाणिक जानकारी नहीं मिली, लोग पश्चिमी देशों में लोकप्रिय सब्जी व फल खूब खाते हैं,गर्मियों मे स्ट्राबेरी खाते हैं, सर्दियों मे रेड वाइन पीते है क्योकि इसके सैकड़ो फायदे इन्टरनेट पर दर्ज हैं। इन तमाम बातों के बीच हमारे परंपरागत खान-पान पीछे छूट गए, जिनमें से घी भी एक है, अगर अपने ग्रन्थों के पन्नों को पलटें तो पता चलता है कि आयुर्वेद में घी को कितना लाभदायक बताया गया है। आर्युवेद में ऐसी अनेक औषधियां हैं, जिनके निर्माण में देशी घी का प्रयोग होता है।

1.घी से हमे विटामिन डी मिलता है जिससे हमारी त्वचा खूबसूरत बनती है।

2.घी खाने से हमारे शरीर मे हार्मोन की मात्रा संतुलित रहती है।

3.घी हमारी हड्डियो को मजबूत बनाता है जिससे बुढ़ापे मे जोड़ों का दर्द नहीं सताता है।

4.घी हमारे शरीर में कई तरह के रसायनों का निर्माण करता है जिससे पाचन क्रिया मजबूत बनती है।

5.घी खाने से विटामिनों के अलावा पोटैशियम फास्फोरस मिनरल्स जैसे पोषक तत्व हमारे शरीर को मिलते हैं।